उपसंहार

औरत शब्द मुस्लिम समाज से संबन्धित माना जाता है जो अरबी भाषा के **'ओराह'** से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ है- 'कवर किया हुआ या ढका हुआ' इस अर्थ से ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मुस्लिम समाज ने इस ओराह शब्द का इस्तेमाल अपने समाज की आधी दुनिया (औरतों) के संबोधन के लिए किया है। औरत को उसके नाम से ही बांध दिया गया अर्थात मुस्लिम औरत को कवर कर दिया गया है। धर्म के नाम पर, समाज के नाम पर, घर कि चहारदिवारी में इज्ज़त के नाम पर। मुसलमान औरत का नाम आते ही घर की चहारदिवारी में क़ैद, पर्दे में रहने वाली एक खातून का चेहरा उभरता है। घर के मोटे-मोटे पर्दों के पीछे जीवन काट देने वाली या घर से बाहर खतरनाक बुर्कों में ऊपर से नीचे तक खुद को छुपाए हुए। इस्लाम धर्म ने जो अधिकार औरतों के लिये बनाए थे वो तो उन्हें नसीब ही नहीं हुए अफसोस की इसी धर्म का सहारा लेकर, इस धर्म के मानने वालों ने उनके अधिकारों का हनन किया तथा इतना ही नहीं औरतों पर सबसे ज़्यादा ज़ुल्म ढाए हैं। इस्लाम धर्म को मानने वाले मुस्लिम कहलाते है और मुस्लिम समाज ने जो बर्बरता मुस्लिम औरतों के साथ दिखाई है वो बहुत ही अधिक निंदनीय है। मुस्लिम समाज में मुस्लिम औरतें घुट-घुट कर सांस लेती हैं। उन्हें अपनी इच्छानुसार सांस लेने तक का अधिकार नहीं है। मुस्लिम औरतों की इस दशा के पीछे इस्लाम धर्म के रखवाले ही जिम्मेदार हैं। इस्लाम धर्म शांति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने वाला धर्म कहा जाता है। लेकिन आज इस्लाम धर्म की व्याख्या ही अलग होती है। मुस्लिम समाज ने उसे किसी दूसरे ही रूप में प्रस्तुत किया है। आज अन्य धर्म के लोग इसे कट्टर धर्म कहकर ही पुकारते हैं और यह सब मुस्लिम समाज में बैठे कट्टरवादी सोच को इख्तियार करने वाले मौलवियों की करतूत है। उन्होंने धर्म का सहारा लेकर अपना दबदबा इस समाज की स्त्रियों पर बनाया। उन्हें धर्म का

डर दिखाया तथा अपने द्वारा बनाए नियम व कानून को मनवा लेने का हर संभव प्रयास किया और इसमें वह सफल भी हुए। मुस्लिम समाज का बहुत बड़ा तबका मौलवियों की चपेट में है। यह सब उनके अशिक्षित और गरीब होने के कारण है इसी वजह से वह इन कट्टर मौलवियों के नियम व कानून को मानने पर बाध्य हैं। मौलवियों की साजिश की शिकार सबसे ज़्यादा स्त्रियाँ ही होती है। स्त्री को समझना चाहिए कि मनुष्य होने के नाते वह भी इस समाज की अनिवार्य इकाई है। उसे अपने आप में यह एहसास भी जगाना चाहिए कि वह स्त्री ही नही, इस समाज की सम्मानित नागरिक भी है। स्त्री को स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना होगा। उसे अपने आपको ऐसा कठोर और भय मुक्त बनाना होगा कि कोई पुरुष उस पर जुल्म करना तो दूर कीचड़ भी न उछाल सके। समाज द्वारा थोपी गयी नैतिकता के सारे मानदंड स्त्री पर डालकर पुरुष वर्ग अपनी मनमानी करने पर उतारू हो जाता है।

साहित्य के माध्यम से मुस्लिम समाज की स्थिति को समझने का अधिकांशत: प्रयास किया गया है, क्योंकि साहित्य समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों और विसंगतियों का मात्र अवलोकन और प्रकटीकरण ही नहीं करता बल्कि वह समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों और विसंगतियों को उद्घाटित करने के साथ-साथ उनके विरुद्ध मोर्चा भी खोलता है। इस प्रकार साहित्य एक नए समाज की संरचना में अपनी अहम भूमिका सुनिश्चित करता है।

साहित्य में उपन्यास विधा के माध्यम से मुस्लिम लेखिकाओं ने मुस्लिम समाज व मुस्लिम स्त्री पर अपनी संवेदनाएँ व्यक्त की हैं। ये संवेदनाए कहीं से आयातित नहीं है, बल्कि स्वानुभूतिक हैं। खुद उन लेखिकाओं के उदगार हैं, जिस समाज में वह पली-बढ़ी हैं और एक समय बाद वही समाज उन्हें अपना शिकार बनाने लगता है तथा उन्हें जीने नहीं देता। इसी यात्रा की कहानी का चित्रण नासिरा शर्मा और सारा अबूबकर ने अपने उपन्यासों

में किया। दोनों लेखिकाएँ अलग-अलग पृष्ठभूमि से हैं, लेकिन मुस्लिम समाज से संबन्धित होने के नाते दोनों ही लेखिकाओं ने मुस्लिम स्त्री की समस्या को अधिक विस्तृत रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

'ठीकरे की मंगनी' और 'चंद्रगिरी के किनारे' उपन्यासों के माध्यम से लेखिकाओं ने मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरीतियों को उजागर किया है। मुस्लिम सामज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था अन्य समाजों की तुलना में अधिक दिखाई देती है। वहाँ सत्ता आज भी पुरुषों के हाथो में है। पुरुषों ने धर्म के नाम पर बनाए गए नियमों को ज़बरदस्ती स्त्रियों पर थोपा है। यह लेखिकाएँ कट्टरवादी पितृसत्तात्मक व्यवस्था का यथार्थपूर्ण चित्रण समाज के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में लेखिका ने दिखाने का सफल प्रयास किया है कि कैसे धार्मिक अंधविश्वास लोगो को घेरे हुए है, और उसी के चलते परिवार के सदस्य अपने ही बच्चों का शोषण करते हैं। उपन्यास की पात्र महरुख है जो उन स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है, जिनको समाज द्वारा दबाया- कुचला जाता है। महरुख को इस कट्टरवादी समाज से मुक्ति चाहिए और वो मुक्ति उसे अकेले को नहीं पूरे समाज की उन लड़कियों के साथ ही चाहिए जिन्हें समाज द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। महरुख ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्थिति को समझा और धार्मिक रूढ़ियों व सामाजिक बंधनों का विरोध कर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। अपने जीवन को अपने ही तरीके से जीती है और अंत में अपनी जिंदगी से पूरी तरह मुतमईन होती है। हम महरुख के माध्यम से समझ सकते है कि यदि स्त्री खुद चाहे तो उसे इस समाज की घटिया सोच से मुक्ति मिल सकती है, वह भी खुले आसमान में उड़ सकती है। यह मुक्ति उसे तभी मिलेगी जब वह अपने अधिकारों को समझेगी और उन अधिकारो के लिए संघर्ष करेगी। स्त्री को संघर्ष करने और उसमें अपनी जीत हासिल करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि शिक्षा ही एक मात्र ऐसा हाथियार है जिसके आगे अच्छे-अच्छे लोग झुक जाते हैं। खुद नासिरा शर्मा का कहना है

कि- 'मेरे अध्ययन ने मेरी सहायता की, जिसने स्थिति को साफ कर बताया कि औरत को गुलाम बनाने की गहरी साजिश है, जिसमें वर्ग-विशेष धर्म का गलत प्रयोग कर रहा है।' इसीलिए वह अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री शिक्षा पर अधिक बल देतीं हैं।

'चंद्रगिरी के किनारे' उपन्यास सारा अबूबकर का है। यह उपन्यास कर्नाटक की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। मुस्लिम समाज से संबंधित होते हुए सारा अबूबकर ने इस समाज में स्त्रियों की जो स्थिति है उसको उजागर किया है कि किस तरह मुस्लिम समाज ने औरतों पर अंकुश लगाकर अपनी स्थिति को मजबूत बना रखा है। उपन्यास की पात्र नादिरा है जिसका बचपन में ही बाल विवाह कर दिया जाता है। नादिरा का शोषण उसके अपने ही घर से शुरू हो जाता है। नादिरा के पढ़ने-लिखने के दिनों में उसे विवाह जैसे कठोर बंधन में बांध दिया जाता है। नादिरा पर धार्मिक अंकुश भी लगाए जाते हैं। नादिरा शिक्षित न होने के कारण अपने साथ हो रहे अत्याचारों का विरोध नहीं कर पाती। कट्टर सोच रखने वाले मौलवियों के बनाए क़ानूनों में उसे दबाया जाता है। उन नियमों का वह विरोध तो करना चाहती है लेकिन उसके अंदर इतनी हिम्मत नहीं होती की वह उनका विरोध कर सके। नादिरा धार्मिक शोषण और मौलवियों के बनाए गए नए-नए नियमों से परेशान होकर अंत में आत्महत्या कर लेती है।

दोनों लेखिकाओं ने भारतीय मुस्लिम समाज के सभी पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। खासकर के स्त्रियों की दशा पर गहराई से पड़ताल की है। भारतीय मुस्लिम समाज को अपने अंदर एक चिंतन की प्रक्रिया पैदा करनी होगी, जिससे मुस्लिम समाज की स्त्री भी पढ़-लिखकर अपनी बदहाली और अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सके, जिससे समाज में उन्हें भी प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हो सके।